RESEARCH FRONT

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

नागार्जुन की कविताओं में चित्रित किसान-मजदूर का चित्रण

डॉ. अलका निकम-वागदरे
असोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली

आधुनिक हिंदी कविता में नागार्जुन की विशिष्ट पहचान है। नागार्जुन अपनी कविता में कभी भी 'अकेले' होने का भाव व्यक्त नहीं करते उनके रचना संसार में मनुष्यों की सक्रिय भागीदारी है। उनके काव्य में मजदूर किसान के सांस्कृतिक जीवन के तत्व विपुल मात्रा में उपलब्ध हैं। श्रमिक-मजदूर जीवन की विषम परिस्थितियों में भी निराश नहीं होता। कठिन परिस्थितियों में भी अडिग, साहस और धैर्य का प्रकटीकरण नागार्जुन के कविता का वैशिष्टय रहा है। नागार्जुन समाज के पीडित, शोषित, किसान-मजदूर वर्ग के पक्षधर रहे हैं उनकी यह पक्षधरता समाज के हर गरीब के लिए है चाहे व किसी भी जाति, धर्म या संप्रदाय का हो।

नागार्जुन ने पुरे देश के खासकर मिथिलांचल को अपनी कविता का क्षेत्र बनाया। विश्व के मार्क्सवादी साहित्य में 'मजदूर' का विशिष्ट स्थान है। नागार्जुन ने मजदूर के साथ-साथ किसानों का भी चित्रण विशेष रूप से किया है। कवि स्वयं सर्वहारा वर्ग से आया है। देश की 90 प्रतिशत जनता जो श्रमजीवी है उसे अपने जीवनयापन के लिए बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए निरंतर संघर्ष करना पडता है।

"कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार स्तंभ रही है। अंग्रेजों के स्वार्थपूर्ण नीति के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था का संतुलन नष्ट हो गया और कृषि पर निरंतर बोझ बढता गया। परिणामस्वरूप भारतीय कृषक का स्थिति दयनीय होती गयी और वह आभावों के बीच जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य होता गया।"[1] कवि क्षुब्ध है कि भारतीय किसान की परिस्थिति नहीं बदली है। आभावग्रस्त किसान मजदूर का चित्रण खिंचते हुए कवि लिखता है –

"बीज नहीं है, बैल नहीं है, वर्षा बिन अकुलाते हैं
नहर रेट बढ गया, खेत में पानी नहीं पटाते हैं
नहीं भूमि में कनमा भर दाना उपजा पाता है
पिछला कर्ज चुका न सके, साहू की झिडकी खाता है
उतना ही फँसते, अपने को जितना अधिक बचाते हैं
भूके रहकर, आधा खाकर दिन पर दुबराते हैं।" [2]

किसान धरती का स्वामी होते हुए भी पराधीन बनता जा रहा है। अल्प भू-धारक होने के कारण उसकी स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। पुरे भारत में और खास कर महाराष्ट्र का किसान मजदूर कर्ज के बोझ तले दबता जा रहा है परिणाम स्वरूप दिन-ब-दिन

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

आत्महत्याओं की घटनाएँ बढती जा रही जो अत्यंत चिंता का विषय है। कवि तंग आकर सवाल करते हुए लिखता है –

"लाख-लाख श्रमिकों की गर्दन कौन रहा है रेत ?
छीन चुका है कौन करोडों खेति हरों के खेत ?"[3]

किसान-मजदूरों के बारे में कवि चिंतित है। आजादी के तेरह साल बाद भी मुनाफाखोरी, चोरबाजारी, तस्करी, भ्रष्टाचार, असहाय गरीबी, श्रमिकों का शोषण कम होने के बावजूद बढता ही चला गया। आज आजादी के सत्तर साल बाद भी इन परिस्थितियों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। किसान-मजदूरों की दयनीय दशा को देखने का वक्त नेताओं के पास नहीं है उन्हें तो यह भी मालूम नहीं है कि किसान-मजदूरों पर कैसे-कैसे अत्याचार हो रहे है ? 'बीते तेरह साल' कविता में कवि स्पष्ट रूप से पूछँता है –

"देखों धँसी-धँसी ए आँखे, पिचके-पिचके गाल
कौन कहेगा, आजादी के बीते तेरह साल ?" [4]

आजादी के सत्तर साल बाद भी यह कविता अत्यंत यथार्थ और सही प्रतीत होती है।

नागार्जुन के कविता की यह विशेषता रही है कि उन्होंने श्रमिक जनता की आधारभूमि से समाज के प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक समस्या पर दृष्टिपात किया। उसका आधार है श्रमिक वर्ग और किसान मजदूर। कवि चाहता है कि श्रमिक को उसके श्रम का पूरा मूल्य मिलना ही चाहिए। ये तबतक नहीं हो सकता जबतक पूँजी का विकेंद्रीकरण नहीं होगा। खेतीहर मजदूर, किसान, श्रमिक और जनसामान्य की आर्थिक दशा को सुधारने के लिए ध्यान देना आवश्यक है। कवि उन लोगों पर बार-बार आवाज उठाता है जिनकी वजह से आर्थिक विषमता बढी है। श्रमिकों को चेतित करते हुए नागार्जुन लिखते हैं

"तन जर्जर है भूख प्यास से
व्यक्ति व्यक्ति दु:ख दैन्य ग्रस्त है
दुविधा में समुदाय पस्त है
लो मशाल, अब घर-घर को आलोकित कर दो
संत बनो प्रजा प्रयत्न के मध्य
शांति को सर्वमंगला हो जाने दो"[5]

नागार्जुन अभाव और गरीबी में घुटती जनता से केवल बौद्धिक सहानुभूति नहीं रखते, उससे उनका रागात्मक भाईचारा है। अपनी कविताओं में इसलिए वे स्वयं उपस्थित रहकर अपनी बात कहते हैं। नागार्जुन अपनी कविता में कभी 'अकेले' होने का भाव नहीं व्यक्त करते हैं। उनके काव्य में मनुष्यों की सक्रिय भागीदारी है। कवि ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सूक्ष्मता से चित्रण किया है। सन 1942 में कवि ने खुद कृषक-आंदोलन का नेतृत्व किया था। किसान-मजदूर का पक्षघर बनकर कवि उन्हें चेतित करते हुए लिखते है –

"रूद्रता अनिवार्य होगी भद्रता के पूर्व

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

सर्वहारा वर्ग के नील लोहित फूल, तुम बहुतेरा फलो
हे अपरिचित भूमिगत, अज्ञात वासी
नाम गोत्र विहिन प्रिय आजाद टुकडी को बहादुर बंदी
निष्कंटक करो इस कंटका भूमि को
अपनी परिधि का करो तुम प्रस्तार
हे नव शक्ति"[6]

कवि किसान-मजदूरों को आगे बढने की प्रेरणा देता है –

"चमचम चमके हँसियाँ, प्यारा झुमे बाली धान की
जय हो इस निशान की, जय मजदूर किसान की" [7]

'प्रगतिवादी कवि किसान-मजदूर-श्रमिकों को इकठ्ठा करके उनकी सरकार स्थापन करता चाहते हैं। कवि को विश्वास है कि क्रांति के माध्यम से ही सदियों से शोषण का शिकार बन यह वर्ग शोषण के शिकंजे से मुक्त होगा।'[8] मजदूर-किसानों के सुखी भविष्य के प्रति आशा प्रकट करते हुए कवि नागार्जुन लिखते हैं –

"सेठ और जमीदारों को नहीं मिलेगी एक छदाम
खेत-खान दुकान मिले सरकार करेगी दखल तमाम
खेत-मजूरों और किसानों में जमीन बँट जायेगी
नहीं किसी कमकर के सिर पर बेकारी मँडराएगी
नौकरशाही का यह रद्दी ढाँचा होगा चूरमचूर
सुजला सुफला के गायेंगे गीत प्रसन्न किसान-मजूर "[9]

नागार्जुन के बेटे शोभाकांत जी लिखते हैं 'शुध्द मजदूर किसान श्रमिक वर्ग में जीवनयापन करनेवालों से कवि को काफी गहरा लगाव है। उनके हर दु:ख को बाँटने की वे हमेशा कोशिश करते है। तंबाकू से कत्थई हो गए दाँतों, फटी बिवाइयों वाले खुरदरे पैर आदि का मेहनती जीवन उन्हें बार-बार आकर्षित करता है। सारे तमाम मेहनती पात्र उनकी कविताओं का विषय है। पतली मुछोंवाला साँवला ग्रामीण खेतीहर मजदूर, पीठ पर फटी बनियनवाला, रिक्शा चालक, गठ्ठल घट्टोंवाले कुलिश-कठोर पैर आदि के साथ उनके जीने का आनंद कुछ और ही है। कलकत्ता हो या दिल्ली, दरभंगा हो या पटना बाबूजी का अधिकांश समय ठेठ श्रमिकों के बीच गुजरता है।'[10] मल्लाहों के नंग-धडंग छोकरों पर नजर पडने के बाद कवि ठेठ गंगामैया से ही प्रार्थना करता है –

"देखना ओ गंगामैया
निराश न करना इन नंग-घडंग चतुर्भुजों को
पुष्ट होगा प्रवाह तुम्हारा इनके भी
श्रम-स्वेद जलसे
मगर अभी इनको निराश न करना
देखना जो गंगामैया"[11]

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

मजदूरों की जिंदगी हमेशा अभावों में गुजरती है। कभी-कभी तो उसे पेटभर खाना भी नसीब नहीं होता। आजादी के सत्तर साल बाद भी इसमें परिवर्तन नहीं हुआ। एक वर्ग ऐसा है जिन्हें क्या खाऐ इसकी चिंता है तो दूसरा वर्ग ऐसा है कि कैसे पेटभर खाए इसकी चिंता है – मजदूरों का सही चित्र कवि हमारे सामने रखता है – जैसे –

"बढा है आगे को बेहतर पेट
धँसी-धँसी आँखे
फुले-फुले गाल
टाँग हैं कि तीलियाँ, अटपटी चाल
दो छोटी एक बडी
लगी है थिगलियाँ पीछे की ओर
मवाद, मिट्टी, पसीना और वक्त
चार-चार दुश्मनों की खांए हुए मार
निकर मन रहा युक्ति की गुहार
आंत की मरोड छुडा न पाई बरगद की फलियाँ
खडी है नई पौध पीपल नीचे खाद की खोज में
देख रहा उपर
कि फलियाँ गिरेंगी
पेट भरेगा
और फिर जाकर
सो रहा चुपचाप झोंपडे के अंदर
भूखी माँ के पेट से सटकर" [12]

नागार्जुन की कविताएँ 'अनुभववादी' कविता की श्रेणी में आती है। 'सतरंगे पंखोंवाली' काव्यसंग्रह में संग्रहित – 'देखना ओ गंगामैया', 'खुरदरे पैर', 'नाकहीन मुखडा' जैसी कविताएँ मजदूरों का सही चित्रण करती है।

नागार्जुन किसानों और मजदूरों को एक है बैनरतले संगठित करने की बात करते हैं। नागार्जुन ने श्रमिक जनता की आधारभूमि से समाज के प्रत्येक वर्ग और उनकी प्रत्येक समस्या पर दृष्टिपात किया है। उनकी सहानुभूति निन्मवर्ग, किसान से है तो उनकी चेतना का आधार श्रमिक वर्ग है। श्रमिक, किसान की दयनीय एवं कारूणिक स्थिति को देखकर वे द्रवित होते हैं। उनकी आह स्वयं कवि की आह बन जाती है। कवि जानता है कि गाँव का श्रमिक, मजदूर गाँव से पलायन कर शहर में आए पूँजीपतियों की मनमानियों का शिकार होते हैं। शहर में आकर वे मजदूर, कुली, रिक्शेवाले, नौकर या चौकीदार बन जाते है। श्रमिकों की इन शोषणमयी स्थिति का चित्रण बडे ही मार्मिक ढंग से किया है जैसे –

"कुली मजदूर हैं
बोझ ढोते हैं खीचते हैं ठेला

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

धूल-धुआ भाँप से पडता है सबका...
थके-माँदे जहाँ-तहाँ हो जाते हैं ढेर"[13]

निष्कर्ष :-

नागार्जुन का काव्य केवल रचनाकर्म मात्र नही है बल्कि वह जनसे 'संवाद' भी है। युगों-युगों से उपेक्षित और हाशिए का जीवन जी रहे जनों को वाणी देना कवि की प्राथमिकता का हिस्सा है। जन-जन में उर्जा भरना और अमानवीय स्थितियों का प्रतिकार करना नागार्जुन की कविता का वैशिष्टय है। बाबा नागार्जुन की कविता उन तीन-चौथाई हिंदुस्तान से संबंधित है जो राष्ट्रीय उत्पादन और विकास की रीढ़ कहा जा सकता है। नागार्जुन की कविता के संदर्भ में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि वे विश्व की संघर्षशील जनता के कवि हैं। समय-समय पर उन्होंने मजदूरों और किसानों के प्रति हार्दिक सहानुभूति व्यक्त की है। उनका स्पष्ट मानना है कि 80 प्रतिशत समाज हमारे इष्ट देवाता है, जो जीवन के आसपास फैली हुई है। मैं भी इन्हीं के साथ जुडा हूँ। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। नागार्जुन ने भी समय-समय पर इस बात को ध्यान में रखकर कविताएँ लिखी। वे मार्क्सवादी, वामपंथी, प्रगतिवादी, जनवादी कवि के रूप में हमारे सामने आते है। नागार्जुन की कविता में चित्रित किसान-मजदूर भारत के किसी भी नगर में किसान-मजदूर का सही प्रतिनिधित्व करता है। नागार्जुन 'यात्री' कवि हैं इसलिए उनकी कविता सडक, झुग्गी-झोपडियों, रिक्शा चलानेवाला मजदूर तक सीधे पहुँच जाती है। नागार्जुन की कविता में 'मानव' को विशेष महत्व दिया गया है। पीडित, शोषित, श्रमिक मजदूरों पर लिखी गयी उनकी कविता सरल और सहज भाषा में लिखी गयी है जी सीधे दिल को छू लेती है।

संदर्भ

1. बाबूराम गुप्त उपन्यासकार नागार्जुन पृ. 131
2. नागार्जुन – हजार हजार बाहोंवाली पृ. 51
3. नागार्जुन प्यासी पथराई आँखे पृ. 18
4. नागार्जुन तालाब की मछलियाँ पृ. 6
5. वही पृ. 111
6. वही पृ. 6
7. डॉ. प्रकाशचन्द्र भट्ट – नागार्जुन जीवन और साहित्य पृ. 55
8. वही पृ. 55
9. नागार्जुन – हजार हजार बाहोंवाली पृ. 52
10. शोभाकांत – नागार्जुन : मेरे बाबूजी पृ. 119
11. नागार्जुन – सतरंगे पंखोंवाली पृ. 21-22
12. नागार्जुन तालाबकी मछलियाँ पृ. 87
13. नागार्जुन – आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने पृ. 29